

शनि देव की व्रत कथा

शनिवार व्रत कथा



मान्यता के अनुसार प्राचीन काल में स्वर्ग लोक में सभी नौ गृहों के देवता विराजमान थे। अचानक उनमें किसी बात पर विवाद हो गया। विवाद की वजह थी की सबसे बड़ा और महान कौन है ? सारे नौ गृह सूर्य, चंद्रमा, मंगल , बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू और केतू अपने अपने प्रभाव को स्थापित करने के लिए लड़ने लगे। विवाद सुलझने की बजाय और उलझता चला गया तो सभी देवता स्वर्ग लोक के राजा इंद्रदेव के पास गए।

इंद्रदेव ने सारा विवाद सुनने के बाद कहा " हे नव गृहों ! आप सभी बहुत ही पुरुषार्थी और पराक्रमी देव हो। आप लोगों में सर्वश्रेष्ठ देव चुनना मेरे लिए संभव नहीं होगा। लेकिन पृथ्वी लोक पर एक राजा है जो यह कार्य करने में समर्थ है। उस यशस्वी राजा का नाम है राजा विक्रमादित्य । मैं आप सबको उन्ही के पास ले चलता हूँ वो जरूर आपके विवाद का हल निकालेंगे।

सभी देवता देवराज इंद्र की अगुवाई में राजा विक्रमादित्य के पास पहुंचे। सारा विवाद सुनकर विक्रमादित्य चिंता में पड़ गए कि किस देवता को बड़ा बताए और किसे छोटा। जिस भी देवता को वो सबसे छोटा बताएंगे उसके क्रोध का कहर उन्हें झेलना पड़ेगा। बहुत समय सोचने के बाद

उन्हे एक उपाय सुझा। विक्रमादित्य ने सभी देवताओ के लिए नौ धातुओं सोना, चांदी, कांस्य, रांगा, जस्ता, अभ्रक, तांबा, सीसा और लोहे से नौ अलग-अलग सिंहासन बनवाए।

राजा विक्रमादित्य ने सभी सिंहासनों को अपने धातु गुण के अनुसार क्रमानुसार रखा और सभी देवताओं से अनुरोध किया की सभी अपने अपने पसंद के सिंहासन पर विराजें। शनि देव को सबसे अंत में लौहे का सिंहासन प्राप्त हुआ। तब राजा विक्रमादित्य ने कहा की आप देवों ने अपना फैसला स्वयं कर दिया है। जो देवता सबसे अंत के लोहे के सिंहासन पर विराजमान हुआ है वही सबसे छोटा है।

राजा विक्रमादित्य के निर्णय से शनि देव बहुत क्रोधित हो गए और आवेश में आकर राजा से बोले " हे राजन ! सभी देवताओं में सबसे छोटा बताकर तुमने मेरा घोर अपमान किया है। तुम्हारा ये पाप क्षमा योग्य नहीं है। शायद तुम्हें मेरे क्रोध की पराकाष्ठा का संज्ञान नहीं है। मेरे क्रोध की साढ़े-साती से तो प्रभु श्रीराम को वनवास और रावण को मृत्यु का सामना करना पड़ा था। फिर तू तो एक मामूली राजा है। बाकी गृहों की तरह मैं एक राशि पर कुछ दिन या कुछ महीने नहीं रहता, अगर मेरी साढ़े साती किसी राशि पर आ जाती है तो वह साढ़े सात साल तक नहीं जाती। इतना कहकर शनिदेव वहाँ से चले गए।

समय निकला और राजा विक्रमादित्य की शनि की साढ़े साती लग गई और उनका भाग्य दुर्भाग्य की तरफ पलटने लगा। एक बार शनिदेव घोड़ों के व्यापारी बनकर राजा विक्रमादित्य की नगरी में गए। शनिदेव अपने साथ सर्वोत्तम नस्ल के घोड़े लेकर नगरी गए जिसकी खबर राजा तक भी पहुँच गई।

राजा ने व्यापारी से अच्छी-अच्छी नस्ल के घोड़े खरीदे तो व्यापारी ने एक घोड़ा राजा को उपहार स्वरूप दिया। राजा व्यापारी का घोड़ा उपहार स्वरूप पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। जैसे ही राजा घोड़े पर बैठा घोड़ा तुरंत हवा की रफ्तार से घने जंगल की तरफ भागने लगा। घने जंगल में पहुँच कर घोड़ा अचानक अदृश्य हो गया।

अब राजा घने जंगल में अकेला भूख प्यास से भटकने लगा। भटकते भटकते राजा विक्रमादित्य को एक भेड़ बकरियाँ चराने वाला चरवाहा मिला। चरवाहे ने राजा को जल भेंट किया और जंगल से बाहर निकलने का मार्ग बताया। राजा विक्रमादित्य ने प्रसन्न होकर चरवाहे को उपहार में अपनी एक मुद्रिका दी और शहर की तरफ निकल पड़ा। शहर पहुँच कर राजा एक व्यापारी की दुकान पर गया वहाँ व्यापारी ने राजा का स्वागत किया और भोजन कराने अपने घर ले गया।

व्यापारी के घर में जिस कमरे में राजा आराम कर रहे थे उसी कमरे में एक सोने का हार रखा हुआ था। जैसे ही व्यापारी भोजन लेने अंदर गया अचानक वो हार गायब हो गया। व्यापारी को जब अपना हार नहीं मिला तो उन्होंने राजा को चोर समझा और राज्य के सैनिकों को सौंप दिया।

सैनिक राजा को पकड़कर राज कारागृह ले गए जहां उस नगरी के राजा ने राजा विक्रमादित्य को चोरी का आरोपी मानकर उसके हाथ पैर काटने का आदेश दिया। सैनिकों ने राजा विक्रमादित्य के दोनों हाथ पैर काटकर उसे नगरी से बाहर फेंक दिया।

राजा अपंग हालत में शहर से बाहर पड़ा था तभी वहाँ से एक तेली अपनी बैलगाड़ी लेकर गुजर रहा था। राजा की हालत पर उसे तरस आ गया और वह राजा को अपनी बैलगाड़ी में डालकर अपने घर ले आया। तेली ने राजा को भोजन दिया और अपने कोल्हू पर बैठा दिया। राजा बैठा बैठा कोल्हू के बैल हँकता रहता और तेली अपना दूसरा काम करता। इसके बदले में तेली राजा को भोजन देता और राजा अपना जीवन यापन करता।

काल का चक्र घूमता रहा और राजा की साढ़े साती के दिन ढल गए। वर्षा ऋतु के एक दिन राजा मल्हार गा रहा था तभी वहाँ से नगरी की राजकुमारी की सवारी निकली। राजकुमारी को राजा विक्रमादित्य का मल्हार इतना पसंद आया की उसने सैनिकों से कहा " सैनिकों ! जो कोई भी ये मल्हार गा रहा है उसकी आवाज में जादू है। उसे ढूँढ के लाए हम उन्ही से विवाह करेंगे। "

सैनिकों ने अपंग हो चुके राजा विक्रमादित्य को ढूँढ कर राजकुमारी के सामने पेश किया। राजा विक्रमादित्य की आवाज से सम्मोहित राजकुमारी ने राजा के अपंग होने के बावजूद उन्ही से विवाह का निश्चय किया। राजकुमारी के मंत्रीगण ने राजकुमारी को बहुत समझाया लेकिन राजकुमारी ने उनकी एक न मानी ।

राजकुमारी और राजा विक्रमादित्य का विवाह सम्पन्न हुआ और राजा विक्रमादित्य और राजकुमारी महल में रहने लगे। एक रात्री को शनि देव ने विक्रमादित्य को स्वपन मे दर्शन दिया और कहा " हे राजन ! तुमने हमारा अपमान किया था और तुम्हें हमारे अपमान करने का फल भोगना पड़ा। अब तो तुम्हें समझ आ गया होगा शनि की साढ़े साती लगने पर क्या दशा होती है। "

राजा ने शनि देव को प्रणाम किया और उनसे माफी मांगी। राजा ने शनि देव से विनती की "हे देव उन्हे जो सजा मिली है ऐसी सजा आज के बाद किसी को मत देना। उन्हे जो विपतियाँ झेलनी पड़ी हैं वो किसी को ना झेलनी पड़ें। "

शनि देव ने राजा की प्रार्थना स्वीकार कर ली और कहा " हे राजन ! आज के बाद जो भी भक्त शनिवार का व्रत पूरे सेवा भाव और निष्ठा से शनिवार व्रत कथा विधि से करेगा मैं उस पर मेहरबान रहूँगा और उसके सारे कष्ट हर लूँगा। " इतना कहकर शनिदेव अंतर्ध्यान हो गए।

सुबह जब राजा विक्रमादित्य उठे तो उन्हे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। शनिदेव ने उन्हे उनके हाथ पैर वापस दे दिए थे। राजकुमारी की भी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। राजा विक्रमादित्य ने राजकुमारी को अपनी सारी कहानी बताई की कैसे शनि की साढ़े साती से वो एक पराक्रमी राजा से एक अपंग बन गए। उसके बाद राजा और राजकुमारी ने हमेशा शनि देव के लिए शनिवार का व्रत रखकर shanivar vrat katha सुनने का प्रण लिया।

सारे नगर में यह बात फैल की की तेली की घर जो अपंग व्यक्ति था वो राजा विक्रमादित्य थे। इस बात का पता उस व्यापारी को भी लगा जिसने राजा को चोर मानकर सैनिकों से गिरफ्तार करवाया था। व्यापारी तुरंत राजा विक्रमादित्य के पास गया और अपने किए की माफी मांगी। विक्रमादित्य ने उसे माफ कर दिया।

व्यापारी के अनुरोध करने पर विक्रमादित्य पुनः उसके घर भोजन पर गए। व्यापारी से तरह तरह के व्यंजन बनाकर विक्रमादित्य का खूब आदर सत्कार किया जिससे उसके पाप का प्रायश्चित हो सके। जब राजा भोजन कर रहे थे तब फिर से चमत्कार हुआ और व्यापारी का जो हार गायब हुआ था वह अचानक प्रकट हो गया।

यह चमत्कार देखने सबने शनि देव की महिमा मानी और उन्हे प्रणाम किया। विक्रमादित्य पुनः अपनी नगरी लौटे तो उनकी प्रजा बहुत खुश हुई। राजा विक्रमादित्य ने घोषणा करवाई की उन्होंने शनिदेव को देवताओं में सबसे छोटा बताया था लेकिन अब उन्हे ज्ञान हो गया है शनिदेव ही सबसे बड़े देव है। वही देवों के देव है। इसलिए पूरी प्रजा को शनिवार का व्रत रखकर shanivar vrat katha सुननी चाहिए।

उसके बाद राजा विक्रमादित्य और उनकी प्रजा नियमित रूप से हर शनिवार , शनिदेव का व्रत रखती और शनिदेव की कथा सुनती। शनिदेव राजा और उनकी प्रजा से बहुत प्रसन्न हुवे और हमेशा उनपर अपनी कृपादृष्टि बनाए रखी।